नारी की त्रासदी
गर्भाशय मुख का कैंसर

भारतीय स्त्रियों में गर्भाशय मुख के कैंसर का बढ़ता प्रमाण चिंता का विषय है। इस कैंसर की विशेषता यह है कि यह अत्यंत धीमी गति से (20 से 30 वर्ष तक) बढ़ता है, जिसे कैंसर पूर्व स्थिति कहते हैं। पूर्व स्थिति में उपचार करने से पूर्ण रूप से स्वस्थ होने की संभावना रहती है। पूर्व स्थिति के बाद विकसित अवस्था में उपचार करना कठिन होता है। हर स्त्री को इस कैंसर के लक्षण व चिकित्सा संबंधी जानकारी होना अत्यंत आवश्यक है।

भारत में प्रमाण अधिक

कैंसर शरीर के किसी भी भाग में हो सकता है। भारत में पुरुषों में अधिकतर मुख, गले, फेफड़े व शिश्न के अलावा आंतों, आमाशय, रक्त, मूत्राशय व मस्तिष्क का कैंसर भी होता है। यह प्रमाण विकसित देशों की अपेक्षा हमारे देश में अधिक है। स्त्रियों में स्तन और गर्भाशय कैंसर के बाद गर्भाशय मुख (Cervix) कैंसर के मामले सबसे ज्यादा सामने आते हैं। सर्विक्स कैंसर के प्रसार की भयावहता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि औरतों को होने वाले कैंसर में करीब 40 प्रतिशत सर्विक्स कैंसर के मामले होते हैं। हमारे शरीर में पुरानी कोशिकाओं के टूटने और नई कोशिकाओं के बनने की प्रक्रिया अनवरत चलती रहती है। स्वास्थ्य सामान्य हो तो पुरानी कोशिकाओं के टूटने और नई कोशिकाओं के निर्माण में संतुलन बना रहता है। लेकिन यदि किसी कारणवश नई कोशिकाओं के बनने की तुलना में पुरानी कोशिकाओं के नष्ट होने की दर कम हो या कोशिकाओं के विभाजन की दर अनियंत्रित हो, तो ये कोशिकाएं आगे चलकर कैंसरकारी बन सकती हैं। पुरानी कोशिकाओं के नष्ट होने की तुलना में अधिक ऊतकों के निर्माण और उनके एक जगह इकट्ठे होने से गांठ बन जाती है। यदि इलाज नहीं किया जाए तो आगे चलकर यही गांठ ट्यूमर का रूप ले लेती है।

रोग के लक्षण

कोशिकाओं के अनियंत्रित विभाजन के परिणामस्वरूप 2 प्रकार की गांठें बनती हैं। बिनाइन, जो कैंसरकारी नहीं होतीं और मैलिगनेंट, जो आगे चलकर कैंसर का रूप ले लेती हैं। यदि मैलिगनेंट गांठें सर्विक्स के क्षेत्र में हों, तो स्त्री को सर्विक्स कैंसर हो जाता है। 2 मासिक चक्रों के बीच में रक्तस्राव होना, योनि मार्ग (वेजाइना) से सफेद स्राव निकलना, योनि की सफाई के समय खून आना, पेट के

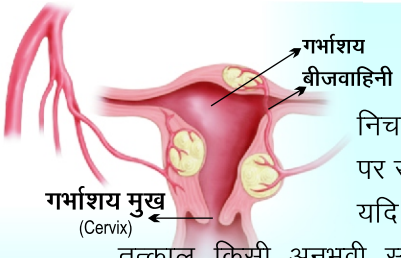

निचले हिस्से में दर्द होना आमतौर पर सर्विक्स कैंसर के लक्षण होते हैं। यदि किसी स्त्री को ऐसा हो तो तत्काल किसी अनुभवी स्त्री रोग विशेषज्ञ को दिखाना चाहिए। इतना ही नहीं, यदि स्त्री को सहवास के दौरान खून आए, तो यह भी सर्विक्स कैंसर का संकेत हो सकता है।

सर्विक्स कैंसर होता कैसे है ? यह जानने के लिए स्त्री के शरीर की आंतरिक संरचना को समझना बहुत जरूरी है। वेजाइना के आगे गर्भाशय का मुख स्थित होता है। इसे ही गर्भाशय ग्रीवा अर्थात् (Cervix) कहा जाता है। गर्भाशय ग्रीवा में कैंसर कोशिकाओं के बनने से ही सर्विक्स कैंसर होता है। इस क्षेत्र में कोई संक्रमण हो या कैंसर कोशिकाएं बनने लगें, तो स्त्री की प्रजनन क्षमता पर बुरा असर पड़ता है। हो सकता है स्त्री कभी भी गर्भ धारण न कर पाए। यही नहीं, सर्विक्स के क्षेत्र में कैंसर कोशिकाओं को नियंत्रित न किया जाए तो कैंसर कोशिकाएं धीरे–धीरे गर्भाशय के क्षेत्र में भी बड़ी आसानी से फैल जाती हैं और शीघ्र उपचार न करने पर स्त्री की मौत भी हो सकती है।

प्रमुख तथ्य

- **स्वच्छता का अभाव** : आवश्यक साफ–सफाई नहीं बरतने से इस कैंसर का खतरा सबसे अधिक होता है। स्त्री के प्रजनन–तंत्र की संरचना बहुत जटिल और सूक्ष्म होती है। अतः यदि स्त्रियां अपनी व्यक्तिगत स्वच्छता में जरा–भी लापरवाही करें, तो पुरुषों की अपेक्षा उनमें संक्रमण जल्दी हो जाता है।
- सर्विक्स कैंसर के सभी मामलों में ज्यादातर स्त्रियां निर्धन और अशिक्षित वर्ग से ही होती हैं।
- इस रोग के साथ सबसे खतरनाक बात तो यह है कि अधिकांश मामलों में कैंसर अंतिम अवस्था में पहुंच चुका होता है। तब स्त्री का इलाज और उसकी जान बचा पाना चिकित्सक के लिए बहुत मुश्किल हो जाता है।
- ह्यूमन पैपिलोमा वायरस किसी पुरुष के शरीर में तो सुप्तावस्था में पड़ा रहता है, लेकिन ऐसे पुरुष से संबंध बनाने वाली स्त्री के शरीर में यह वायरस सर्विक्स कैंसर का कारण बनता है।
- छोटी उम्र में विवाह, कम उम्र में अधिक प्रसूति, पति का परस्त्री के साथ संभोग, तंबाकू का सेवन इत्यादि कारणों से कैंसर अधिक प्रमाण में होता है।

पूर्व स्थिति एवं प्रसार

शुरुआत में योनि मार्ग में इंफेक्शन होकर सफेद पानी जाता है। निरंतर जाने वाले सफेद पानी व संक्रमण के कारण गर्भाशय के मुख (Cervix) पर व्रण/घाव (Ulcer) होता है। धीरे–धीरे उसमें परिवर्तन होकर कैंसर की पूर्व स्थिति बनती है। आगे चलकर यही कैंसर का रूप धारण करता है। एक विशेष प्रकार का विषाणु (वायरस) इस कैंसर की शुरुआत करता है, जो ह्यूमन पैपिलोभा वायरस (H.P.V.) कहलाता है। गर्भाशय ग्रीवा कैंसर के 99.7 प्रतिशत मामलों में यह विषाणु जिम्मेदार पाया जाता है। इस विषाणु के संक्रमण की सफलतापूर्वक रोकथाम के लिए आजकल एच.पी.वी. वैक्सीन उपलब्ध है, जो इस जानलेवा कैंसर से बचाव करती है।

जांच-प्रक्रिया

कैंसर का पूर्व स्थिति में निदान करने के लिए स्क्रीनिंग टेस्ट आवश्यक है। यह टेस्ट पेप स्मीअर (Pap smear) कहलाता है। गर्भाशय मुख (Cervix) की मांसपेशी को लकड़ी के स्पैचुला से कांच की स्लाइड पर लेकर माइक्रोस्कोप से जांच की जाती है। इससे यह रोग होने की संभावना पता चल जाती है। इसके बाद आगे की जांच की जाती है। कम समय, कम खर्च में यह जांच होती है। 35 वर्ष की आयु के पश्चात प्रत्येक स्त्री को हर 2 वर्ष में पैप स्मीअर टेस्ट करानी चाहिए।

कैंसर पूर्व स्थिति का निदान होने पर कॉल्पोस्कोपी जांच की जाती है। इससे निश्चित निदान होकर तुरंत उपचार प्रारंभ किया जा सकता है। प्रारंभिक अवस्था में गर्भाशय मुख के व्रण को जलाया जाता है (Cauterisation), जिसे लेजर चिकित्सा से भी जला सकते हैं। महिला की उम्र अधिक हो या अधिक तकलीफ होने पर गर्भाशय निकाला भी जाता है (Hysterectomy)। इससे वह स्त्री पूर्णतः रोगमुक्त हो सकती है।

स्त्रीरोग तज्ञ के पास आने वाली अधिकांश महिलाएं पूर्णतः विकसित व प्रसारित कैंसर की अवस्था लेकर आती हैं। इस स्थिति में गर्भाशय मुख पर अल्सर या बड़ा ट्यूमर दिखता है। प्रारंभ में यह नीचे योनिमार्ग की ओर व ऊपर गर्भाशय की और फैलता है। धीरे–धीरे वह यकृत, फुफ्फुस व शरीर के अन्य भागों में फैलता है। इस प्रक्रिया को 6 माह से 1 वर्ष का समय लगता है। तब रोग का निदान करना कठिन कार्य नहीं। ट्यूमर से एक टुकड़ा निकालकर (Biopsy) जांच के लिए पैथालाजी लैब भेजा जाता है। बॉयोप्सी की रिपोर्ट अंतिम होती है। उसके अनुसार उपचार किया जाता है।

कौन-कौनसे टेस्ट

पेट का अल्ट्रासाउंड, एम.आर.आई., छाती का एक्सरे, ब्लड प्रोफाइल की जांच कराने की आवश्यकता होती है। इस जांच से हिमोग्लोबिन से लेकर रक्त में श्वेत और लाल रक्तकणों की मौजूदगी आदि बातों का पता लगाया जाता है। लेकिन सर्विक्स कैंसर का पता लगाने वाली सबसे महत्वपूर्ण और निर्णायक जांच है– पैप स्मीअर टेस्ट।

कॉल्पोस्कोपी द्वारा योनि व गर्भाशय ग्रीवा में कैंसर की कोशा को अत्यंत प्रारंभिक व सूक्ष्म अवस्था में ही पकड़ा जा सकता है। यदि पैप स्मीअर या अन्य किसी स्क्रीनिंग जांच में कोई खराबी मिले, लगातार सफेद पानी (श्वेत प्रदर) जाने की शिकायत हो, अत्यधिक मासिक स्राव हो या माहवारी बंद होने के बाद रक्तस्राव होने लगे तो कॉल्पोस्कोपी कराना जरूरी है। इसके अलावा सर्विक्स कैंसर के ऑपरेशन के बाद कॉल्पोस्कोपी द्वारा यह भी देखा जाता है कि कहीं कैंसर का कोई हिस्सा छूट तो नहीं गया।

बीमारी के प्रमुख चरण

सर्विक्स कैंसर की स्थिति में इलाज को भी कैंसरकारी कोशिकाओं की उग्रता को देखते हुए 4 चरणों में बांटा जाता है।

• **स्टेज 1** : इसका अर्थ है कि कैंसर सिर्फ श्रोणि प्रदेश तक ही सीमित है और सर्जरी द्वारा गर्भाशय को निकाल देने से भविष्य में कैंसर होने की संभावना को पूरी तरह से खत्म कर दिया जाता है। लेकिन इसके बाद स्त्री गर्भधारण नहीं कर पाती। यदि डॉक्टर को स्थिति थोड़ी भी गंभीर नजर आती है, तो सर्जरी द्वारा गर्भाशय निकाल दिए जाने के बाद भी रेडियोथेरेपी से कैंसर कोशिकाओं को जला दिया जाता है।

• **स्टेज 2A** और **2B** : इस स्थिति में पहुंचने का अर्थ है कि कैंसर कोशिकाएं वेजाइना के आसपास के हिस्सों में भी फैल गई हैं। कैंसर कोशिकाओं ने आसपास के अंगों को कितना अधिक जकड़ लिया है, इसी आधार पर सर्विक्स कैंसर के लक्षणों को स्टेज 2A और 2B भागों में बांटा जाता है। साथ ही यह भी तय किया जाता है कि मरीज को सिर्फ कीमोथेरेपी, रेडियोथेरेपी या दोनों की जरूरत है।

• **स्टेज** 3 : इस स्थिति में कैंसर कोशिकाएं पेल्विक वाल तक पहुंच जाती हैं।

• **स्टेज** 4 : इस अवस्था में कैंसर कोशिकाएं ब्लैडर (मूत्राशय) और रेक्टम (मलाशय) को भी अपने चंगुल में ले लेती हैं। यह गंभीरतम स्थिति होती है।

कुछ खास बातें

- जननांगों की आवश्यक स्वच्छता का ध्यान रखकर इस प्रकार के कैंसर से बचा जा सकता है। खास तौर पर पीरियड के दौरान अंतःवस्त्रों की सफाई का विशेष ध्यान रखना चाहिए और जरूरत पड़ने पर बदलते रहना चाहिए।
- हमेशा अच्छी क्वालिटी के सैनिटरी नैपकिन का ही इस्तेमाल करें। सर्विक्स कैंसर से बचने के लिए यह जरूरी है कि आपके साथ आपके पति भी अपनी व्यक्तिगत स्वच्छता का पूरा ध्यान रखें।
- शोधों द्वारा ज्ञात हुआ है कि विटामिन ए की कमी से भी सर्विक्स कैंसर हो सकता है। इन शोधों में यह उल्लेख है कि विटामिन ए की कमी से कैंसर कोशिकाओं के गुणात्मक विखंडन की दर काफी बढ़ सकती है। इसलिए दैनिक भोजन में विटामिन ए युक्त खाद्य पदार्थों जैसे– गाजर, पालक, चुकंदर आदि को शामिल करें।
- विकसित देशों में तो स्त्रियों में पर्याप्त जागरूकता और स्वास्थ्य सुविधाओं के कारण यह कैंसर स्त्रियों को होने वाले कैंसरों की सूची में छठे–सातवें स्थान पर चला गया है, जबकि भारत की स्त्रियां अब भी सर्विक्स कैंसर से बदहाल हैं क्योंकि उनमें अपने स्वास्थ्य के प्रति अपेक्षित जागरूकता का अभाव है। अतः इस बीमारी से बचने का सबसे बेहतर तरीका है कि आप स्त्री रोग विशेषज्ञ से अपनी नियमित जांच कराती रहें।

स्टेज 3 और स्टेज 4 में रेडियोथेरेपी और कीमोथेरेपी साथ–साथ दी जाती है। इन दोनों ही अवस्थाओं में सर्जरी नहीं की जा सकती। कैंसर कोशिकाएं अंदर ही अंदर इतनी दूर तक फैल चुकी होती हैं कि ऑपरेशन की कोई अहमियत नहीं रह जाती। सर्विक्स कैंसर स्त्री के शरीर को पूरी तरह खोखला बना देता है। यदि सही समय पर सही इलाज शुरू हो गया और अगले 5 वर्षों में उस स्त्री में दोबारा कैंसर के लक्षण प्रकट नहीं हुए तो स्टेज 1 कैंसर के 80–90 प्रतिशत मामलों में माना जाता है कि स्त्री पूरी तरह ठीक हो गई है। लेकिन एक बार सर्विक्स कैंसर का इलाज पूरा होने के बाद भी प्रत्येक 3 माह में आवश्यकतानुसार स्त्री को 1–2 वर्षों तक जांच के लिए बुलाया जाता है और इस दौरान पैप स्मीअर जांच में यह देखा जाता है कि कोशिकाएं सामान्य हैं या नहीं।

स्टेज 2 सर्विक्स कैंसर का सफल इलाज करा चुकीं करीब 65–75 प्रतिशत स्त्रियों में यदि 5 वर्षों तक कैंसर के लक्षण नहीं मिले तो वे हमेशा के लिए सर्विक्स कैंसर से मुक्त मानी जाती हैं। लेकिन स्टेज 3 और स्टेज 4 में पहुंचने वाली सिर्फ 20–25 प्रतिशत मामलों में ही अगले 5 वर्षों में दोबारा लक्षण प्रकट नहीं होने पर ये स्त्रियां कैंसरमुक्त मानी जा सकती हैं।

यदि स्टेज 1 कैंसर है और स्त्री लगभग पूरे समय की गर्भवती है, तो चिकित्सक बच्चे के जन्म की अनुमति दे देते हैं, लेकिन प्रसव के तुरंत बाद कैंसर की चिकित्सा अनिवार्य हो जाती है।

प्रभावशाली टीका

गर्भाशय ग्रीवा कैंसर के बचाव के लिए अब एक अत्यंत प्रभावशाली टीका भी उपलब्ध है। इस टीके की मदद से सर्विक्स कैंसर से बचा जा सकता है। जिन महिलाओं को पहले भी कैंसर हो चुका हो, उन्हें भी यह टीका दिया जा सकता है। गर्भवती महिलाओं को यह टीका नहीं दिया जाना चाहिए। इसी प्रकार गर्भ धारणा की योजना बनाते वक्त भी यह ध्यान रखें कि या तो टीके की सभी खुराकें पूरी होने के बाद गर्भ धारण करें या गर्भावस्था पूर्ण होने के पश्चात ही टीके लगवा सकती हैं। जिन महिलाओं को किसी अन्य टीके से पूर्व में रिएक्शन (प्रतिकूल क्रिया) हुई हो, उन्हें यह टीका नहीं लगाना चाहिए। कैंसर होने पर इसके उपचार में लगने वाले खर्च व शारीरिक कष्ट की तुलना में इससे बचाव के टीके लगवा लेना निश्चित रूप से लाभकारी है।

गर्भाशय मुख या अन्य किसी भी अंग के कैंसर का उपचार करते समय 2 बातों का ध्यान रखा जाता है।

- **रुग्णा का शारीरिक कष्ट कम करना :** कैंसर की अंतिम स्टेज में रोगी को भयंकर पीड़ा होती है। जिसे कम करने का प्रयास किया जाता है। कुछ रुग्णों में रक्तस्राव होने के कारण शरीर का रक्त कम हो जाता है। ऐसे समय रक्तदान का सहारा लिया जाता है। इसके अलावा रोगी की कमजोरी दूर करने के लिए उचित औषधि आहार दिया जाता है।
- **मानसिक तनाव कम करना :** कैंसर के रुग्णों का मनोबल कम हो जाता है। इसके लिए उन्हें आवश्यक धैर्य बंधाना, उनका आत्मविश्वास बढ़ाना व उन्हें प्रसन्न रखने का प्रयत्न करना चाहिए।

सहमें नहीं, मुकाबला करें

आज प्रचलित रोगों में कैंसर सबसे अधिक भयावह रोग माना जाता है। जिस किसी रोगी को यह पता चल जाए कि उसे कैंसर हो गया है, उसकी कैंसर से मृत्यु भले ही न हो, किंतु कैंसर हो जाने की बात सुनकर जो मानसिक तनाव व अवसाद निर्माण होता है, उससे रोगी और परिवारजन विचलित हो जाते हैं। रोगी का शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य दिन–प्रतिदिन गिरता रहता है, रोगी को तो जैसे हर समय आंखों के आगे अपनी मौत ही नजर आती है, कैंसर का नाम सुनकर ही उसकी सांसें रुक जाती हैं, जिंदगी थम–सी जाती है।

कैंसर रुग्ण को मौत के डर का मुख्य कारण यह भी है कि आजकल फिल्मों व कहानियों में अधिकतर यही बताया जाता है कि कैंसर पीड़ितों की मृत्यु हो जाती है। इससे लोगों के दिमाग में यह बैठ चुकी है कि कैंसर होने पर मौत अटल है। इस स्थिति में मनःस्थिति ठीक न रहने के कारण भोजन ठीक से नहीं हो पाता, जिससे दवाइयां भी असर नहीं करती हैं– अतः कैंसर पीड़ितों को अपना मन मजबूत रखना चाहिए। यदि रोग का शीघ्रातिशीघ्र निदान हो, योग्य समय पर उचित चिकित्सा शुरू की जाए और रोगी का मनोबल दृढ़ हो, तो कैंसर जैसी महाभयंकर व्याधि से भी मुक्ति पाई जा सकती है। इसका एक श्रेष्ठ उदाहरण क्रिकेटर युवराजसिंह हैं, जिन्होंने इस रोग से विचलित न होकर उसे मात दी और एक बार फिर मैदान पर जौहर दिखाने लगे।

आइए, जानें...

कैंसर शब्द ग्रीक भाषा के 'कन' व 'सर' शब्दों के संयोग से बना है। ग्रीक भाषा में कन का अर्थ होता है–केकड़ा और सर का अभिप्राय है जड़। जिस प्रकार केकड़े के शरीर के चारों ओर जड़ों जैसे पैर फैले रहते हैं, वैसे ही कैंसरग्रस्त कोशिकाओं के चारों ओर उसका तंतु अथवा स्नायु–जाल फैला रहता है। अतः इसे महामूल भी कहा गया है। इन तंतुओं द्वारा ही कोषाणुओं के विघटित सूक्ष्मांश एक स्थान से दूसरे स्थान पर चले जाते हैं।

डॉ. अंजू ममतानी
'जीकुमार आरोग्यधाम', नारा रोड,
जरीपटका, नागपुर – 14
फोन : (0712) 2646600, 2634415
www.mamtaniayurveda.com